प्रवासी देशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार - विदेश मंत्रालय, भारत सरकार का योगदान

श्रीमती सुनीति शर्मा

किसी भी देश की पहचान वहाँ की भाषा और उससे जुड़े साहित्य से होती है जिसके सृजन का एक क्रमबद्ध इतिहास होता है। भारत भाषा की दृष्टि से विविध भाषाओं के साथ एक अत्यंत समृद्ध राष्ट्र है। यहाँ की सभी भाषाएँ परस्पर पूरक हैं किन्तु हिंदी भारत वर्ष की सर्वाधिक बोली-समझी जाने वाली भाषा है और भारत की सांस्कृतिक चेतना के रूप में इसकी अपनी पहचान है।

भारत सरकार हिंदी के विश्व भर में प्रचार-प्रसार के लिए प्रयासरत है। भारत सरकार का विदेश मंत्रालय विदेश स्थित भारतीय मिशनों/केंद्रों के माध्यरम से 'विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार योजना' के तहत विदेशों में हिंदी शिक्षण व प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करने की सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

इस योजना के तहत मंत्रालय अपने संबंधित मिशनों के माध्यम से हिंदी शिक्षण तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी शैक्षणिक संस्थाओं तथा गैर-सरकारी संगठनों आदि के हिंदी शिक्षण तथा प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों हेतु वित्तीय अनुदान तथा अन्य माँग संबंधी अनुरोधों को पूरा करने का प्रयास करता है। हिंदी शिक्षण हिंदी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अत्यंत महत्व पूर्ण है इसलिए मंत्रालय हिंदी शिक्षण कार्यक्रमों हेतु विभिन्नक संस्थाओं और व्यक्तियों द्वारा उनकी माँग पर हिंदी की शिक्षण सामग्री/ पुस्तकें/ सॉफ़्टवेयरों आदि की आपूर्ति अपने मिशनों के माध्यंम से कराता है। विदेश मंत्रालय के प्रयास और मिशनों के सहयोग से आज कई देशों में हिंदी बोली और समझी जा रही है तथा साथ ही वहाँ के स्थानीय विश्व विद्यालय, स्कूल, संस्थाएँ आदि अपने पाठ्यक्रम में हिंदी को विभिन्न स्तरों तक शामिल कर रहे हैं और इस कार्य में स्थानीय सरकारें भी योगदान कर

रही हैं क्यों कि आज वैश्विक मंच पर भारत एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है और व्यावहारिक दृष्टि से भारत के महत्व को देखते हुए भी कई देशों की सरकारें हिंदी को किसी न किसी स्तर और रूप में प्रोत्साहित कर रही हैं।

विदेश मंत्रालय की 'विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार योजना' के तहत कई देशों में हिंदी शिक्षण का कार्य चल रहा है जिसमें मुख्यत: शामिल हैं - पारामारिबो, कैण्डीस, हो ची मिन्ह सिटी, येरेवान, उलान बतार, बुडापेस्ट तथा बाकू आदि। इन देशों में संबंधित शिक्षकों को मानदेय भी प्रदान किया जाता है। हिंदी शिक्षण और हिंदी के प्रचार-प्रसार की गति प्रवासी देशों में अन्यी देशों के मुकाबले काफी अधिक तथा अच्छी है। इसका मूल कारण है - प्रवासी भारतीय समुदायों द्वारा अपनी पुरानी भाषा और अपनी संस्कृति से लगाव और इसके प्रति आदर तथा झुकाव।

भारत सरकार का विदेश मंत्रालय विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार की दिशा में मिशनों के माध्याम से विश्व हिंदी सम्मेचलनों तथा अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों के आयोजन को प्रायोजित करता है।

जैसा कि विदित है प्रथम विश्वै हिंदी सम्मेमन नागपुर में 10-12 जनवरी, 1975 को आयोजित किया गया था। मॉरीशस में स्थापित विश्व हिंदी सचिवालय की परिकल्पना इसी सम्मेलन में की गई थी। विश्व हिंदी सचिवालय ने अब अपना कार्य शुरू कर दिया है जिसे गति पकड़ने में अभी कुछ और समय लग सकता है। इसके लिए अभी बहुत कुछ किया जाना है। भारत सरकार द्वारा इसके भवन निर्माण के कार्य पर कार्रवाई चल रही है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार को और अधिक गति प्रदान करने तथा इसके क्षेत्र को व्यापक बनाने के उद्देश्य से विदेश मंत्रालय ने विश्व हिंदी सम्मेलनों के अतिरिक्त एक वर्ष में तीन अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों को आयोजित करने का प्रावधान रखा है। ये सम्मेलन भी संबंधित मिशनों से उन्हें स्थानीय संस्थाओं और संगठनों से प्राप्त

अनुरोधों के आधार पर मंत्रालय को भेजे गए प्रावधानों के अनुरूप स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से आयोजित किए जाते हैं।

कुल मिलाकर विदेश मंत्रालय विदेशों में हिंदी शिक्षण और उसके प्रचार-प्रसार में अहम और सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इसके अतिरिक्त , मंत्रालय का एक और अंग भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद भी भारतीय संस्कृति तथा भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित और प्रसारित करने का भी कार्य कर रहा है। परिषद ने कई देशों में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र खोले हैं जिनमें विभिन्न विधाओं से संबंधित शिक्षा प्रदान की जाती है। परिषद ने 100 से भी अधिक देशों में पीठों की स्थापना की है जिसमें अन्य भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त हिंदी पीठ भी है जहाँ हिंदी का अध्ययन-अध्यापन का कार्य किया जाता है। परिषद कई देशों में हिंदी शिक्षकों को भी भेजता है और वहाँ के स्थानीय बच्चों को हिंदी पढ़ने के लिए छात्रवृत्तियाँ भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, भारत में केंद्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी पढ़ने हेतु भी छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं और इसके लिए विभिन्न मिशनों को छात्रों के लिए स्लॉट आवंटित किए गए हैं।

उल्लेनखनीय है कि भारत सरकार का विदेश मंत्रालय हिंदी के प्रचार-प्रसार में काफी सक्रिय है। विदेश मंत्रालय विश्व भर में हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़े सभी व्यक्ति, संस्थाओं, संगठनों की सराहना करता है जो हिंदी में इस प्रकार रुचि दिखाते हुए हिंदी को आगे बढ़ाने में सहयोग दे रहे हैं।

उप सचिव (हिंदी)
विदेश मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली
dshindi@mea.gov.in